

TYBA कोचिंग सेंटर (TYBA Coaching Center)

राजस्थान CET (12वीं व स्नातक स्तर) दैनिक 6:00 AM मास्टर नोट्स श्रृंखला | Day 3 Release

विषय: राजस्थान भूगोल (भाग-1 : सामान्य परिचय, स्थिति, विस्तार, अध्याय 1: भौगोलिक स्थिति, अक्षांश-देशांतर, रेडक्लिफ रेखा, नवीनतम हेल्पलाइन: सीमाएँ व संभाग-जिले) 10 संभाग एवं 50 जिले 6367029449

★ TYBA 6-चरणीय शिक्षण मॉडल: 'कहानी, कब, कहाँ, क्यों, कैसे और सीख'

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSMSSB) के CET पाठ्यक्रम में राजस्थान के भूगोल का पहला अध्याय सबसे मौलिक आधार है। राज्य की अक्षांशीय व देशांतरीय स्थिति, सूर्योदय का 35 मिनट का देशांतरीय अंतर, 1070 किमी की रेडक्लिफ रेखा, 5 पड़ोसी राज्यों की सीमाएं, और रामलुभाया समिति के आधार पर पुनर्गठित 10 संभाग व 50 जिलों की वास्तविक स्थिति को 100% द्विभाषी रूप में विस्तृत किया गया है।

1. राजस्थान का नामकरण, भौगोलिक विकास एवं उत्पत्ति (Nomenclature & Geological Genesis)

1.1 पृष्ठभूमि एवं कहानी का सार (Geological & Historical Narrative)

The Epic Journey from Tethys Sea to the Thar: Millions of years ago, the landmass of Rajasthan did not exist in its present form. Earth's ancient supercontinent Pangaea fragmented into Angaraland in the north and Gondwanaland in the south, separated by the shallow Tethys Sea. The ancient Aravalli mountain system and the Hadoti plateau arose as primeval segments of the Gondwanaland shield. Gradually, the Tethys Sea receded and silted up due to river deposits, leaving behind the fertile Eastern Alluvial Plains and the hyper-arid Western Thar Desert with its saline salt lakes (Sambhar, Pachpadra, Didwana) serving as marine relics. In historical antiquity, this heroic soil was titled *Brahmavarta* in Vedic texts, *Marukantara* by Maharishi Valmiki in Ramayana, and *Rajputana* by George Thomas in 1800 CE, before Colonel James Tod permanently christened it *Rajasthan* or *Raithan* in his 1829 masterpiece.

टेथिस सागर से थार मरुस्थल बनने की रोमांचक कहानी: आज से करोड़ों वर्ष पूर्व राजस्थान की यह मरुभूमि ऐसी नहीं थी जैसी आज दिखती है। पृथ्वी का प्राचीन भूखंड पेंजिया दो भागों में बंटा—उत्तर में अंगारालैंड और दक्षिण में गोंडवानालैंड, और बीच में बहता था टेथिस सागर। राजस्थान की प्राचीनतम अरावली पर्वतमाला और हाड़ौती का पठार उसी गोंडवानालैंड के प्राचीन अवशेष हैं। समय बीतने के साथ जब टेथिस सागर पीछे हटा और नदियों द्वारा लाई गई गाद से भर गया, तो उससे पूर्वी मैदानी प्रदेश और पश्चिमी थार मरुस्थल का जन्म हुआ। आज राजस्थान की खारे पानी की झीलें (सांभर, पचपदरा, डीडवाना) उसी प्राचीन टेथिस सागर के जीवित अवशेष हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ऋग्वेद में इसे 'ब्रह्मवर्त', रामायण में महर्षि वाल्मीकि द्वारा 'मरुकंतार', 1800 ई. में जॉर्ज थॉमस द्वारा 'राजपूताना' और 1829 ई. में कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में इसे 'राजस्थान' या 'रायथान' नाम दिया।

1.2 कब हुआ? (Historical Nomenclature & Administrative Timeline)

Timeline of Nomenclature & Modern Reorganization:

- Vasantgarh Inscription (625 CE / 682 Vikram Samvat): Found at Khimal Mata temple in Sirohi; contains the earliest epigraphic mention of the term '*Rajasthaniyaditya*' (राजस्थानीयादित्य).
- Muhnot Nainsi ri Khyat (17th Century): Celebrated chronicler Muhnot Nainsi and poet Veerbhan (in *Rajrupak*) officially used the term 'Rajasthan'.
- Year 1800 CE: Irish adventurer George Thomas became the first individual to verbally call this entire geographic territory 'Rajputana' (recorded by William Franklin in 1805 in '*Military Memoirs of Mr. George Thomas*').
- Year 1829 CE: British political agent Colonel James Tod ('Horse-riding Baba') published his magnum opus '*Annals and Antiquities of Rajasthan*' (Central and Western Rajput States of India), introducing 'Rajasthan' and 'Raithan'.
- 25 March 1948: The term 'Rajasthan' was first officially utilized in the integration process during the 2nd stage (Former Rajasthan Union / पूर्व राजस्थान संघ).

- **26 January 1950:** The name 'Rajasthan' received formal constitutional and statutory sanction upon the commencement of the Indian Constitution.
- **1 November 1956:** Complete integration achieved (7th stage); post of Rajpramukh abolished; Rajasthan became a full-fledged State under the State Reorganisation Commission (Fazal Ali Commission), with 26 districts (Ajmer became the 26th district).
- **New Districts Era (2023):** Ramlubhaya Committee recommendations led to the creation of new districts and divisions, reorganizing the administrative map into 10 Divisions and 50 Districts.

नामकरण एवं प्रशासनिक गठन का सटीक कालक्रम:

- **बसंतगढ़ शिलालेख (625 ई. / 682 वि.सं.):** सिरौही के खिमल माता मंदिर से मिला; इसमें पहली बार 'राजस्थानीयादित्य' शब्द का प्रयोग हुआ।
- **मुहणौत नैणसी री ख्यात (17वीं सदी):** राजस्थान के अबुल फजल मुहणौत नैणसी और कवि वीरभाण (राजरूपक) ने पहली बार 'राजस्थान' शब्द का प्रयोग किया।
- **सन 1800 ई.:** आयरलैंड के निवासी **जॉर्ज थॉमस** ने इस भूभाग के लिए सर्वप्रथम 'राजपूताना' नाम दिया (विलियम फ्रैंकलिन ने 1805 में अपनी पुस्तक में इसका उल्लेख किया)।
- **सन 1829 ई.:** कर्नल जेम्स टॉड ('घोड़े वाले बाबा') ने अपनी विख्यात पुस्तक 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' में इस क्षेत्र को 'राजस्थान' और 'रजवाड़ा' नाम दिया।
- **25 मार्च 1948:** एकीकरण के द्वितीय चरण (पूर्व राजस्थान संघ) में पहली बार 'राजस्थान' शब्द को संघ के नाम में सरकारी मान्यता मिली।
- **26 जनवरी 1950:** संविधान लागू होने के दिन इस राज्य को विधिवत संवैधानिक रूप से 'राजस्थान' नाम स्वीकृत हुआ।
- **1 नवम्बर 1956:** 7वें चरण में वर्तमान राजस्थान का गठन पूरा हुआ; राज्य पुनर्गठन आयोग (फैजल अली) के तहत अजमेर राज्य का 26वां जिला बना।
- **नवीनतम पुनर्गठन (2023):** रामलुभाया समिति की सिफारिशों के आधार पर प्रशासनिक सुगमता हेतु नए जिलों और संभागों का गठन हुआ, जिससे राज्य में 10 संभाग और 50 जिले स्थापित हुए।

1.3 कहाँ हुआ? (Geographical Location, Coordinates & Shape)

Exact Mathematical Location and Spatial Extent:

- **Global Position:** Located in the North-Eastern Hemisphere globally; situated in the North-Western quadrant of the Republic of India.
- **Latitudinal Coordinates (अक्षांशीय स्थिति):** 23°03' N to 30°12' N Northern Latitude.
 - **Total Latitudinal Span:** 7°09' (30°12' - 23°03').
 - **Southernmost Point:** Borkund village (बोरकुण्ड), Kushalgarh tehsil, Banswara district (23°03' N).
 - **Northernmost Point:** Kona village (कोणा गांव), Sri Ganganagar tehsil and district (30°12' N).
 - **North-to-South Distance:** 826 Kilometers.
- **Longitudinal Coordinates (देशांतरीय स्थिति):** 69°30' E to 78°17' E Eastern Longitude.
 - **Total Longitudinal Span:** 8°47' (78°17' - 69°30').
 - **Westernmost Point:** Katra village (कटरा गांव), Sam tehsil, Jaisalmer district (69°30' E).
 - **Easternmost Point:** Silana village (सिलाना गांव), Rajakhera tehsil, Dholpur district (78°17' E).
 - **East-to-West Distance:** 869 Kilometers.
- **North-South vs. East-West Distance Contrast:** East-to-West length (869 km) exceeds North-to-South length (826 km) by exactly 43 Kilometers.
- **Central Point of Rajasthan:** The geographical center point of Rajasthan lies in Nagaur district at Lapolai / Gagraan village.
- **Geometrical Shape:** Irregular Rhomboid (विषमकोणीय चतुर्भुज) or kite-shaped (पतंगाकार), first identified by renowned geographer T.H. Handley.

सटीक गणितीय स्थिति, विस्तार एवं आकृति:

- **वैश्विक स्थिति:** विश्व के संदर्भ में उत्तर-पूर्वी गोलार्ध में; भारत के संदर्भ में उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है।

- **अक्षांशीय स्थिति:** 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक।
 - कुल अक्षांशीय विस्तार: 7°09' (30°12' में से 23°03' घटाने पर)।
 - दक्षिणतम बिंदु: **बोरकुण्ड गांव**, कुशलगढ़ तहसील, बांसवाड़ा जिला (23°03' उ.अ.)।
 - उत्तरतम बिंदु: **कोणा गांव**, श्रीगंगानगर तहसील व जिला (30°12' उ.अ.)।
 - उत्तर से दक्षिण कुल लंबाई: **826 किलोमीटर**।
- **देशांतरीय स्थिति:** 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर तक।
 - कुल देशांतरीय विस्तार: 8°47' (78°17' में से 69°30' घटाने पर)।
 - पश्चिमिमत बिंदु: **कटरा गांव**, सम तहसील, जैसलमेर जिला (69°30' पू.दे.)।
 - पूर्वतम बिंदु: **सिलाना गांव**, राजाखेड़ा तहसील, धौलपुर जिला (78°17' पू.दे.)।
 - पूर्व से पश्चिम कुल चौड़ाई: **869 किलोमीटर**।
- **लंबाई व चौड़ाई का अंतर:** राजस्थान की चौड़ाई (869 किमी) उसकी लंबाई (826 किमी) से ठीक **43 किलोमीटर अधिक** है।
- **मध्यवर्ती बिंदु:** राजस्थान का मध्यवर्ती गांव नागौर जिले का **लापोलाई (या गगराना)** माना जाता है।
- **भौगोलिक आकृति:** टी.एच. हेंडले के अनुसार राजस्थान की आकृति **विषमकोणीय चतुर्भुज (पतंगाकार / Rhomboid)** है।

1.4 क्यों हुआ? (Geographic Drivers of Aridity & The Sun-Time Gap)

Why Spatial Geometry Shapes Rajasthan's Environment:

- **Solar Time Disparity of 35 Minutes 8 Seconds:** Earth rotates 1° of longitude every 4 minutes (60 minutes / 15°). Since Rajasthan's longitudinal span is 8°47', the solar time difference between extreme eastern Silana (Dholpur) and extreme western Katra (Jaisalmer) is calculated as:
 $Time\ Gap = (8^\circ \times 4\ min) + (47' \times 4\ sec) = 32\ minutes + 188\ seconds = 35\ minutes\ and\ 8\ seconds\ (\sim 36\ minutes).$
 Therefore, the sun rises and sets approximately 35 minutes earlier in Dholpur than in Jaisalmer!
- **Tropic of Cancer (23°30' N / कर्क रेखा):** Passes through the southern boundary of Rajasthan. Enters Dungarpur district (touching southern border at Chikhli village) and bisects Banswara district through Kushalgarh. Total length in Rajasthan is approximately 26 Kilometers. Banswara receives the most vertical sun rays on 21 June (Summer Solstice), while Sri Ganganagar receives the most oblique (slanting) sun rays.

भौगोलिक बनावट से उपजे प्राकृतिक प्रभाव (सूर्योदय में 35 मिनट का अंतर व कर्क रेखा):

- **धौलपुर और जैसलमेर में सूर्योदय का अंतर (35 मिनट 8 सेकंड):** पृथ्वी 1° देशांतर घूमने में 4 मिनट का समय लेती है। राजस्थान का कुल देशांतरीय फैलाव 8°47' है। इसलिए सबसे पूर्वी बिंदु सिलाना (धौलपुर) और सबसे पश्चिमी बिंदु कटरा (जैसलमेर) के बीच समय का अंतर इस प्रकार निकाला जाता है:
 $समय\ अंतर = (8^\circ \times 4\ मिनट = 32\ मिनट) + (47' \times 4\ सेकंड = 188\ सेकंड\ या\ 3\ मिनट\ 8\ सेकंड) = 35\ मिनट\ 8\ सेकंड\ (लगभग\ 36\ मिनट)।$
 यही कारण है कि राजस्थान में सबसे पहले सूर्योदय और सूर्यास्त **धौलपुर** में होता है, और सबसे अंत में **जैसलमेर** में होता है।
- **कर्क रेखा (23°30' उत्तरी अक्षांश):** राजस्थान के दक्षिणी छोर से गुजरती है। यह डूंगरपुर जिले की दक्षिणी सीमा (चीखली गांव) को छूती हुई बांसवाड़ा के बीचों-बीच (कुशलगढ़) से निकलती है। राजस्थान में इसकी कुल लंबाई लगभग **26 किलोमीटर** है। 21 जून को सूर्य की किरणें **बांसवाड़ा** में सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं, जबकि **श्रीगंगानगर** में सबसे ज्यादा तिरछी पड़ती हैं।

1.5 कैसे हुआ? (Area, International & Inter-State Boundary Architecture)

Total Area & Comparative Spatial Dimensions:

- **Total Area:** 3,42,239 Square Kilometers (or 1,32,139 Square Miles).
- **National Percentage:** Represents 10.41% of India's total geographical surface area.
- **National Rank:** 1st Rank in India by area since 1 November 2000 (following the bifurcation of Madhya Pradesh and creation of Chhattisgarh).
- **Global Country Comparisons:** Rajasthan is roughly equal in area to Germany, Norway, and Poland; double the size of England; and 17 times larger than Israel!

क्षेत्रफल एवं तुलनात्मक स्थिति:

- कुल क्षेत्रफल: 3,42,239 वर्ग किलोमीटर (मील में: 1,32,139 वर्ग मील)।
- देश के कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत: भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% (लगभग 1/10वां भाग)।
- देश में स्थान: क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का प्रथम स्थान है (1 नवम्बर 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ अलग होने के बाद से)।
- विश्व के देशों से तुलना: राजस्थान का क्षेत्रफल जर्मनी, नॉर्वे और पोलैंड के लगभग बराबर है; इंग्लैंड से दोगुना और इजरायल से 17 गुना बड़ा है!

2. राजस्थान की स्थलीय सीमाएं (Land Boundaries: International & Inter-State)

2.1 सीमा संरचना का मास्टर सारांश (Boundary Summary)

Total Perimeter (कुल स्थलीय सीमा): Rajasthan possesses zero maritime coastline. Total terrestrial boundary perimeter is 5,920 Kilometers:

- International Border (अंतर्राष्ट्रीय सीमा - Radcliff Line):** 1,070 km (18.07% of total perimeter).
- Inter-State Border (अंतर्राज्यीय सीमा):** 4,850 km (81.93% of total perimeter, adjoining 5 Indian states).

कुल स्थलीय सीमा का विभाजन: राजस्थान पूर्णतः स्थलरुद्ध (Landlocked) राज्य है, इसकी कोई समुद्री सीमा नहीं है। कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है:

- अंतर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिफ रेखा): 1,070 किलोमीटर (कुल सीमा का 18.07%)।
- अंतर्राज्यीय सीमा (5 पड़ोसी राज्य): 4,850 किलोमीटर (कुल सीमा का 81.93%)।

2.2 अंतर्राष्ट्रीय सीमा: रेडक्लिफ रेखा (The Radcliff Line - 1,070 km)

विशेषता (Feature)	विस्तृत विवरण एवं परीक्षा उपयोगी तथ्य
निर्धारण तिथि एवं अध्यक्ष	17 अगस्त 1947 को सर सिरिल रेडक्लिफ (Sir Cyril Radcliff) द्वारा कलम से खींची गई कृत्रिम सीमा।
प्रारंभ एवं समाप्ति स्थल	उत्तर में हिन्दू मलकोट (श्रीगंगानगर) से लेकर दक्षिण में बाड़मेर के शाहगढ़ क्षेत्र के भालगांव / बखासर तक।
पाकिस्तान के प्रांत व जिले	पाकिस्तान के 2 प्रांत स्पर्श करते हैं: 1. पंजाब प्रांत (बहावलपुर, बहावलनगर, रहीमयार खान), 2. सिंध प्रांत (घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, उमरकोट, थारपारकर, संघर)। कुल 9 जिले।
राजस्थान के सीमावर्ती जिले	श्रीगंगानगर, अनूपगढ़ (नया जिला), बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर। - सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा: जैसलमेर (464 किमी)। - न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा: बीकानेर (168 किमी)। - सीमा के सबसे नजदीक जिला मुख्यालय: अनूपगढ़ (पूर्व में श्रीगंगानगर)। - सीमा से सबसे दूर जिला मुख्यालय: बीकानेर (अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिलों में)।

2.3 अंतर्राज्यीय सीमाएं: 5 पड़ोसी राज्य (Inter-State Borders - 4,850 km)

पड़ोसी राज्य (State)	सीमा की लंबाई	राजस्थान के सीमावर्ती जिले	पड़ोसी राज्य के सीमावर्ती जिले
1. मध्य प्रदेश (MP) (सर्वाधिक सीमा)	1,600 किमी (10 जिले)	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, कोटा, बारान, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा। झालावाड़ सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा (520 किमी) बनाता है। भीलवाड़ा सबसे कम बनाता है (16 किमी)। कोटा और चित्तौड़गढ़ दो बार सीमा छूते हैं।	मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, राजगढ़, आगर-मालवा, मंदसौर, नीमच, रतलाम, झाबुआ। (10 जिले)
2. हरियाणा (Haryana)	1,262 किमी	हनुमानगढ़, चुरू, झुंझुनूं, नीम का थाना (नया), कोटपूतली-बहरोड़ (नया), खैरथल-तिजारा (नया), डीग (नया)।	सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात (नूह)। (7 जिले)

पड़ोसी राज्य (State)	सीमा की लंबाई	राजस्थान के सीमावर्ती जिले	पड़ोसी राज्य के सीमावर्ती जिले
3. गुजरात (Gujarat)	1,022 किमी	बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, सांचौर (नया), बाड़मेर। बाड़मेर गुजरात के साथ सबसे छोटी सीमा बनाता है।	कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, महिसागर, दाहोद। (6 जिले)
4. उत्तर प्रदेश (UP)	877 किमी	डीग (नया जिला) एवं धौलपुर। (भरतपुर अब सीधे यूपी से नहीं लगता; डीग लगता है)।	मथुरा एवं आगरा। (2 जिले)
5. पंजाब (Punjab) (न्यूनतम सीमा)	89 किमी (सबसे छोटी)	श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़। श्रीगंगानगर पंजाब से सबसे लंबी, हनुमानगढ़ सबसे छोटी सीमा बनाता है।	फाजिल्का एवं मुक्तसर। (2 जिले)

★ दो-दो राज्यों को छूने वाले राजस्थान के 4 जिले (Inter-State Junction Districts)

- **हनुमानगढ़:** पंजाब एवं हरियाणा दोनों से सीमा बनाता है।
- **डीग (नया जिला):** हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश दोनों से सीमा बनाता है।
- **धौलपुर:** उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दोनों से सीमा बनाता है।
- **बांसवाड़ा:** मध्य प्रदेश एवं गुजरात दोनों से सीमा बनाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय व अंतर्राज्यीय दोनों सीमा बनाने वाले 2 जिले:** 1. **श्रीगंगानगर** (पाकिस्तान + पंजाब), 2. **बाड़मेर** (पाकिस्तान + गुजरात)।

3. राजस्थान की संभाग एवं जिला व्यवस्था (Administrative Divisions & Districts)

3.1 संभागीय व्यवस्था का ऐतिहासिक विकासक्रम (Evolution of Divisional System)

Timeline of Divisional Administration:

- **Initiated in 1949:** Started by the government of Chief Minister Hiralal Shastri with 5 initial divisions: Jaipur, Jodhpur, Bikaner, Udaipur, and Kota.
- **Abolished in April 1962:** Chief Minister Mohanlal Sukhadia completely abolished the divisional commissioner system, deeming it an unnecessary administrative layer.
- **Re-established on 26 January 1987:** Chief Minister Harideo Joshi revived the divisional system and created the 6th division: Ajmer (carved out of Jaipur).
- **4 June 2005:** Chief Minister Vasundhara Raje formed the 7th division: Bharatpur (carving districts from Jaipur and Kota divisions).
- **August 2023:** Government established 3 new divisions: Sikar, Pali, and Banswara, expanding the total count from 7 to 10 Divisions.

संभागीय व्यवस्था का इतिहास:

- **1949 में शुरुआत:** प्रथम मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री की सरकार ने 5 प्रारंभिक संभागों (जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा) के साथ शुरुआत की।
- **अप्रैल 1962 में समाप्ति:** मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने संभागीय आयुक्त व्यवस्था को गैर-जरूरी मानकर बंद कर दिया।
- **26 जनवरी 1987 को पुनर्जीवन:** मुख्यमंत्री हरदेव जोशी ने संभागीय व्यवस्था को पुनः बहाल किया और **6वां संभाग: अजमेर** (जयपुर से अलग कर) बनाया।
- **4 जून 2005:** मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने **7वां संभाग: भरतपुर** (जयपुर व कोटा संभागों से जिले लेकर) बनाया।
- **अगस्त 2023:** रामलुभाया समिति की सिफारिश पर **3 नए संभाग: सीकर, पाली और बांसवाड़ा** बनाए गए, जिससे राज्य में कुल संभागों की संख्या 7 से बढ़कर **10 संभाग** हो गई।

3.2 राजस्थान के 10 संभागों की पूर्ण तालिका (The 10 Administrative Divisions)

संभाग का नाम (Division)	शामिल जिलों की संख्या	शामिल जिले (Districts Covered)	विशिष्ट प्रशासनिक पहचान
1. जयपुर संभाग	7 जिले	जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा, खैरथल-तिजारा, अलवर	सर्वाधिक जनसंख्या व जनसंख्या घनत्व वाला संभाग। दूदू राजस्थान का सबसे छोटा जिला है।
2. सीकर संभाग (नया)	4 जिले	सीकर, झुंझुनूं, चूरू, नीम का थाना	शेखावाटी क्षेत्र का संभाग। तोरावाटी व कांतली नदी का प्रवाह क्षेत्र।
3. बीकानेर संभाग	4 जिले	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़	नहरों द्वारा सर्वाधिक सिंचित संभाग। न्यूनतम नदियों वाला संभाग।
4. अजमेर संभाग	7 जिले	अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, टोंक, नागौर, डीडवाना-कुचामन, शाहपुरा	राजस्थान का केंद्रीय संभाग। सभी सीमाओं के मध्य स्थित।
5. भरतपुर संभाग	6 जिले	भरतपुर, धौलपुर, करौली, डीग, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी	तीन राज्यों (हरियाणा, यूपी, एमपी) को छूने वाला संभाग। डांग क्षेत्र।
6. कोटा संभाग	4 जिले	कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़	सर्वाधिक नदियों वाला संभाग। सर्वाधिक वर्षा व आर्द्रता वाला संभाग।
7. जोधपुर संभाग	6 जिले	जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलोदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा	सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला संभाग। न्यूनतम वर्षा व जनसंख्या घनत्व वाला मरुस्थलीय संभाग।
8. पाली संभाग (नया)	4 जिले	पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही	गोधवाड़ क्षेत्र। अरावली की तलहटी व सुकड़ी-जवाई बेसिन।
9. उदयपुर संभाग	5 जिले	उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा, सलूंवर	झीलों का संभाग, खनिज संपदा व अरावली वनों में समृद्ध।
10. बांसवाड़ा संभाग (नया)	3 जिले (सबसे छोटा)	बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़	न्यूनतम जिलों वाला संभाग (मात्र 3 जिले)। पूर्णतः अनुसूचित जनजाति (टीएसपी) बाहुल्य वागड़ संभाग। कर्क रेखा इसी संभाग से गुजरती है।

3.3 26वें से 50वें जिले के गठन का ऐतिहासिक क्रम

जिला सं.	जिले का नाम	गठन तिथि	मूल जिला जिससे अलग हुआ	संबंधित मुख्यमंत्री
26वां	अजमेर	1 नवम्बर 1956	अजमेर-मेरवाड़ा (केंद्रशासित) का विलय	मोहनलाल सुखाड़िया
27वां	धौलपुर	15 अप्रैल 1982	भरतपुर से अलग हुआ	शिवचरण माथुर
28वां, 29वां, 30वां	बारां, दौसा, राजसमंद (ट्रिक: B-D-R)	10 अप्रैल 1991	बारां (कोटा से), दौसा (जयपुर से), राजसमंद (उदयपुर से)	भैरोंसिंह शेखावत
31वां	हनुमानगढ़	12 जुलाई 1994	श्रीगंगानगर से अलग हुआ	भैरोंसिंह शेखावत
32वां	करौली	19 जुलाई 1997	सवाई माधोपुर से अलग हुआ	भैरोंसिंह शेखावत
33वां	प्रतापगढ़	26 जनवरी 2008	चित्तौड़गढ़, उदयपुर व बांसवाड़ा से (परमेशचंद कमेटी)	वसुंधरा राजे
34वां से 50वां	19 नए जिले (जैसे अनूपगढ़, फलोदी, सलूंवर, बालोतरा, सांचौर, डीग, दूदू, नीम का थाना आदि)	अगस्त 2023	प्रशासनिक विकेंद्रीकरण (रामलुभाया समिति की रिपोर्ट पर)	अशोक गहलोत

4. राजस्थान भूगोल भाग 1 के परीक्षा विशेषांक (Smart Exam Nuggets)

★ परीक्षा में बार-बार पूछे जाने वाले 5 गोल्डन पॉइंट्स (Must-Remember Points for CET)

- कर्क रेखा:** 23°30' उत्तरी अक्षांश रेखा राजस्थान के केवल दो जिलों **डूंगरपुर** (दक्षिणी सीमा) और **बांसवाड़ा** (कुशलगढ़) से गुजरती है (कुल 26 किमी)।
- सर्वाधिक व न्यूनतम सीमा वाले जिले:** झालावाड़ सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा (520 किमी एमपी से) बनाता है; भीलवाड़ा सबसे छोटी (16 किमी एमपी से) बनाता है। जैसलमेर सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा (464 किमी) बनाता है; बीकानेर सबसे छोटी (168 किमी) बनाता है।
- क्षेत्रफल में सबसे बड़ा व छोटा जिला:** सबसे बड़ा जिला **जैसलमेर** (38,401 वर्ग किमी - राज्य के कुल क्षेत्रफल का 11.22%); सबसे छोटा जिला **दूदू** है।
- सूर्य की किरणों का तिरछापन:** सूर्य की किरणें सबसे सीधी **बांसवाड़ा** में और सबसे तिरछी **श्रीगंगानगर** में पड़ती हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सबसे दूर जिला मुख्यालय:** सीमावर्ती 5 जिलों में सीमा से सबसे दूर जिला मुख्यालय **बीकानेर** है; पूरे राजस्थान में सीमा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय **धौलपुर** है।

5. राजस्थान के प्रमुख भौतिक विभाग: आधारभूत संरचना (Four Physical Divisions)

5.1 राजस्थान के चार प्राकृतिक प्रदेशों का तुलनात्मक मास्टर चार्ट

भौतिक प्रदेश (Division)	क्षेत्रफल (%) Area)	जनसंख्या (%) Pop)	मिट्टी के प्रकार (Soil Types)	जलवायु एवं वर्षा	भूगर्भीय अवशेष (Geological Origin)
1. पश्चिमी रेतीला मैदान (थार मरुस्थल)	61.11% (लगभग 2/3)	40% (विश्व का सर्वाधिक आबाद)	रेतीली बलुई मिट्टी (एंटीसोल्स व एरिडीसोल्स)	शुष्क एवं अर्द्धशुष्क (20 से 50 सेमी)	टेथिस सागर का अवशेष (खारे पानी की झीलें)
2. अरावली पर्वतमाला (मध्यवर्ती पहाड़ी प्रदेश)	9%	10%	पर्वतीय / लाल-पीली मिट्टी (इन्सेप्टीसोल्स)	उप-आर्द्र जलवायु (50 से 90 सेमी)	गोंडवानालैंड का अवशेष (प्री-कैम्ब्रियन वलित पर्वत)
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश (नदी बेसिन)	23%	39% (सर्वाधिक जनघनत्व)	उपजाऊ जलोढ़ / दोमट मिट्टी (एल्फीसोल्स)	आर्द्र जलवायु (60 से 80 सेमी)	टेथिस सागर का अवशेष (नदियों द्वारा लाई गई गाद)
4. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाड़ौती का पठार)	6.89%	11%	मध्यम काली कपासी मिट्टी (वर्टीसोल्स)	अति-आर्द्र जलवायु (80 से 120 सेमी)	गोंडवानालैंड का अवशेष (दक्कन लावा का विस्तार)

5.2 अरावली पर्वतमाला के प्रमुख पर्वत शिखर एवं प्रमुख दर्रे (Passes)

Aravalli Peaks & Mountain Passes Hierarchy:

- **Top Peaks Sequence:** 1. Guru Shikhar (1722m / 5650 ft) - Mount Abu, Sirohi (Colonel Tod called it 'Peak of the Saints' / संतों का शिखर). 2. Ser (1597m) - Sirohi. 3. Dilwara (1442m) - Sirohi. 4. Jarga (1431m) - Udaipur/ Rajsamand. 5. Achalgarh (1380m) - Sirohi. 6. Kumbhalgarh (1224m) - Rajsamand. 7. Raghunathgarh (1055m) - Sikar (highest peak in North Aravalli). 8. Taragarh (870m) - Ajmer (Central Aravalli). 9. Bairat (704m) - Kotputli-Jaipur.

• Major Mountain Passes (नाल / दर्रे):

- **Pali:** Desuri ki Nal (links Pali to Rajsamand/Mewar), Someshwar Nal, Bar Pass (बर दर्रा - connects Marwar to Ajmer; NH-14 passes through).
- **Rajsamand:** Hathigudha Nal (access to Kumbhalgarh fort), Khamli Ghat, Goram Ghat, Paglya Nal (Jheelwa ki Nal).
- **Udaipur:** Kewada ki Nal, Debari Pass, Phulwari ki Nal (wildlife sanctuary).

अरावली की प्रमुख चोटियां एवं दर्रे (नाल):

- सर्वोच्च चोटियों का क्रम (याद रखने की ट्रिक: 'गुरु से दिल लगाकर जरा आस रखो'): 1. गुरुशिखर (1722 मी.) - सिरोही (कर्नल टॉड ने 'संतों का शिखर' कहा)। 2. सेर (1597 मी.) - सिरोही। 3. दिलवाड़ा (1442 मी.) - सिरोही। 4. जरगा (1431 मी.) - उदयपुर। 5. अचलगढ़ (1380 मी.) - सिरोही। 6. कुंभलगढ़ (1224 मी.) - राजसमंद। 7. रघुनाथगढ़ (1055 मी.) - सीकर (उत्तरी अरावली की सबसे ऊंची चोटी)। 8. तारागढ़ (870 मी.) - अजमेर (मध्य अरावली)। 9. बैराठ (704 मी.) - कोटपूतली।
- प्रमुख दर्रे (नाल):
 - पाली के दर्रे: देसूरी की नाल (पाली को राजसमंद से जोड़ती है), सोमेश्वर नाल, बर दर्रा (मारवाड़ को अजमेर से जोड़ता है)।
 - राजसमंद के दर्रे: हाथीगुढ़ा की नाल (कुंभलगढ़ दुर्ग जाने का मार्ग), कामली घाट, गोरम घाट, पगलिया नाल।
 - उदयपुर के दर्रे: केवड़ा की नाल, देबारी दर्रा, फुलवारी की नाल।

6. राजस्थान के प्राचीन एवं भौगोलिक उपनाम (Ancient Geographic & Cultural Epithets)

प्राचीन / भौगोलिक उपनाम	संबंधित वर्तमान भौगोलिक क्षेत्र एवं जिले	ऐतिहासिक एवं भू-आकृतिक पृष्ठभूमि
मरु एवं मेरु (Maru & Meru)	'मरु' = पश्चिमी थार मरुस्थल; 'मेरु' = अरावली पर्वतीय प्रदेश।	राजस्थान के प्राचीनतम भौगोलिक ध्रुव। मरु मरुस्थल को और मेरु पर्वत श्रृंखला को व्यक्त करता है।
जांगल देश (Jangal Pradesh)	बीकानेर, अनूपगढ़ एवं उत्तरी जोधपुर का क्षेत्र।	यहां के शासक स्वयं को 'जांगलधर बादशाह' कहते थे। शमी (खेजड़ी) और कंटीली झाड़ियों की बहुलता।
मत्स्य देश (Matsya Desh)	अलवर, भरतपुर, कोटपूतली-बहरोड़, डीग।	महाभारत काल का महाजनपद। राजधानी: विराटनगर (बैराठ)।
शूरसेन प्रदेश (Surasena)	धौलपुर, करौली, भरतपुर का पूर्वी भाग।	प्राचीन महाजनपद। राजधानी: मथुरा। भगवान श्रीकृष्ण के यदुवंश से संबंधित।
शिवि जनपद / माध्यमिका	चित्तौड़गढ़, उदयपुर एवं मेवाड़ का भूभाग।	राजधानी: माध्यमिका (नगरी)। यहां से शिवि जनपद के सिक्के मिले।
कांठल (Kanthali)	प्रतापगढ़ का माही नदी के किनारे का तटवर्ती क्षेत्र।	माही नदी के 'कांठे' (किनारे) पर स्थित होने के कारण प्रतापगढ़ को कांठल कहते हैं। माही को 'कांठल की गंगा' कहा जाता है।
छप्पन का मैदान (Chhappan Plain)	प्रतापगढ़ एवं बांसवाड़ा के मध्य का भूभाग।	माही बेसिन में 56 गांवों एवं 56 नदी-नालों का समूह होने के कारण यह उपजाऊ मैदान 'छप्पन का मैदान' कहलाता है।
ऊपरमाल (Uparmal)	बिजोलिया (भीलवाड़ा) से भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) तक।	पथरीला एवं ऊंचा उठा हुआ उपजाऊ पठारी भाग। बिजोलिया किसान आंदोलन का मुख्य केंद्र।
भोराट का पठार (Bhorat Plateau)	कुंभलगढ़ (राजसमंद) से गोगुंदा (उदयपुर) के मध्य।	अरावली का अत्यधिक ऊंचा पठारी भाग (औसत ऊंचाई 1225 मी.)।
गिरवा (Girwa)	उदयपुर शहर के चारों ओर की तश्तरीनुमा पहाड़ियां।	'गिरवा' का अर्थ है पहाड़ियों की मेखला (तश्तरी जैसी आकृति)। इसी कारण उदयपुर सुरक्षित रहा।
कुबड़ पट्टी / बांका पट्टी	नागौर एवं डीडवाना क्षेत्र।	भूजल में प्लोराइड की अत्यधिक मात्रा के कारण लोगों की रीढ़ की हड्डी झुक जाती है और दांत पीले पड़ जाते हैं।

प्राचीन / भौगोलिक उपनाम	संबंधित वर्तमान भौगोलिक क्षेत्र एवं जिले	ऐतिहासिक एवं भू-आकृतिक पृष्ठभूमि
राठ / अहिरवाटी (Rath)	कोटपूतली-बहरोड़, नीम का थाना एवं अलवर का सीमावर्ती क्षेत्र।	अहीर (यादव) बाहुल्य क्षेत्र। बोली: अहिरवाटी (राठी)।

7. राजस्थान के राज्य प्रतीक एवं विशिष्ट भौगोलिक पहचान (State Symbols of Rajasthan)

Official State Symbols of Rajasthan:

- **State Tree (राज्य वृक्ष):** Khejri (*Prosopis cineraria*) - Declared state tree on 31 October 1983. Known as the 'Kalpvriksha of the Thar' and 'Sami/Janti'. Processed fruit is called *Sangri*, dried leaves *Loong*. Postal stamp issued on 5 June 1988 (60 paise).
- **State Flower (राज्य पुष्प):** Roheda (*Tecomella undulata*) - Declared state flower on 31 October 1983. Called the 'Marwar Teak' or 'Desert Rose'. Blooms in spring with vibrant orange-yellow flowers.
- **State Bird (राज्य पक्षी):** Godavan / Great Indian Bustard (*Ardeotis nigriceps*) - Declared on 21 May 1981. Known as *Son Chiriya* or *Hukna*. Critically endangered, sheltered at Desert National Park (Jaisalmer), Sorsan (Baran), and Sokhaliya (Ajmer).
- **State Animals (राज्य पशु):**
 - **Wild Category (वन्यजीव):** Chinkara (*Gazella bennettii*) - Indian Gazelle, declared 1981. Highly venerated by the Bishnoi community.
 - **Domesticated Category (पशुधन):** Camel (*Camelus dromedarius*) - Declared official state animal on 30 June 2014 (notified 19 September 2014) to protect the indigenous camel population from trafficking.
- **State Dance (राज्य नृत्य):** Ghoomar (नृत्यों का सिरमौर, आत्मा).
- **State Song (राज्य गीत):** "केसरिया बालम आओ नी, पधारो म्हारे देस" (sung in Mand style, popularized internationally by Padma Shri Allah Jilai Bai).

राजस्थान के आधिकारिक राज्य प्रतीक:

- **राज्य वृक्ष: खेजड़ी (*Prosopis cineraria*)** - 31 अक्टूबर 1983 को घोषित। 'थार का कल्पवृक्ष', 'जांटी', 'शमी'। फल को 'सांगरी' और पत्ती को 'लूम/लूंगा' कहते हैं। 5 जून 1988 को 60 पैसे का डाक टिकट जारी।
- **राज्य पुष्प: रोहिड़ा (*Tecomella undulata*)** - 31 अक्टूबर 1983 को घोषित। 'मरुशोभा' या 'रेगिस्तान का सागवान'। मार्च-अप्रैल में केसरिया-पीले फूल खिलते हैं।
- **राज्य पक्षी: गोडावण (*Great Indian Bustard / Ardeotis nigriceps*)** - 21 मई 1981 को घोषित। 'सोहन चिड़ी', 'हुकना', 'गुधनमेर'। राष्ट्रीय मरु उद्यान (जैसलमेर), सोरसन (बारां) और सोखलिया (अजमेर) में पाया जाता है।
- **राज्य पशु:**
 - वन्यजीव श्रेणी: **चिंकारा (*Gazella bennettii*)** - 1981 में घोषित। छोटा हिरण।
 - पशुधन श्रेणी: **ऊंट (*Camelus dromedarius*)** - 30 जून 2014 को घोषणा, 19 सितम्बर 2014 को अधिसूचना। ऊंटों की घटती संख्या रोकने हेतु पशुधन श्रेणी में राज्य पशु का दर्जा मिला।
- **राज्य नृत्य: घूमर** ('नृत्यों का सिरमौर', 'राजस्थान की आत्मा')।
- **राज्य गीत: "केसरिया बालम आओ नी, पधारो म्हारे देस"** - मांड गायिकी में पद्मश्री अल्लाह जिलाई बाई द्वारा विश्वविख्यात किया गया।

8. राजस्थान के प्रमुख शहरों एवं भौगोलिक क्षेत्रों के लोकप्रिय उपनाम (City Epithets)

शहर / क्षेत्र का नाम (City / Region)	लोकप्रिय भौगोलिक एवं सांस्कृतिक उपनाम (Famous Epithets)	उपनाम का कारण एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि
जयपुर (Jaipur)	गुलाबी नगरी (Pink City), पूर्व का पेरिस, पन्ना नगरी, भारत का पेरिस, हेरिटेज सिटी, रंग-श्री के द्वीप (Island of Glory - सी.वी. रमन द्वारा)।	1876 में प्रिंस अल्बर्ट के आगमन पर सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा गुलाबी रंग से रंगवाया गया। विश्व प्रसिद्ध रत्न एवं आभूषण मंडी।
जोधपुर (Jodhpur)	सूर्य नगरी (Sun City), नीली नगरी (Blue City), मरुस्थल का प्रवेश द्वार (Gateway of Thar), जोधाणा, राजस्थान की विधिक राजधानी (High Court)।	वर्ष भर तेज धूप चमकने के कारण Sun City। पुराने शहर के नीले घरों के कारण Blue City।
उदयपुर (Udaipur)	झीलों की नगरी (City of Lakes), पूर्व का वेनिस (Venice of the East), राजस्थान का कश्मीर, सैलानियों का स्वर्ग, व्हाइट सिटी (White City)।	पिछोला, फतेहसागर, उदयसागर, जयसमंद झीलों की बहुलता। सफेद संगमरमरी महलों के कारण व्हाइट सिटी।
अजमेर (Ajmer)	राजस्थान का हृदय (Heart of Rajasthan), भारत का मक्का, अंडों की टोकरी, साम्प्रदायिक सद्भाव का संगम, राजपूताना की कुंजी।	राजस्थान के बिल्कुल केंद्र में स्थित। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह एवं ब्रह्मा मंदिर का निकट होना।
जैसलमेर (Jaisalmer)	स्वर्ण नगरी (Golden City), पीले पथरों का शहर, हवेलियों का नगर, झरोखों की नगरी, म्यूजियम सिटी, पंखों की नगरी (Windmills)।	पीले बलुआ पथरों से निर्मित सोनार दुर्ग व हवेलियां धूप में सोने जैसी चमकती हैं।
बांसवाड़ा (Banswara)	सौ द्वीपों का शहर (City of Hundred Islands), आदिवासियों का देश, राजस्थान का चेरापूँजी (सर्वाधिक वर्षा वाले दक्षिणी छोर के कारण)।	माही नदी के बहाव क्षेत्र में सैकड़ों छोटे-छोटे टापू (द्वीप) बने होने के कारण।
बूंदी (Bundi)	बावड़ियों का शहर (City of Stepwells), छोटी काशी, दूसरी काशी, आजाद नगरी।	रानीजी की बावड़ी सहित 100 से अधिक कलात्मक ऐतिहासिक बावड़ियों की उपस्थिति।
झालावाड़ (Jhalawar)	राजस्थान का नागपुर (संतरा उत्पादन हेतु), झालरापाटन: 'घंटियों का शहर' (City of Bells)।	महाराष्ट्र के नागपुर की भांति अत्यधिक उत्तम किस्म के संतरों का उत्पादन। झालरापाटन में 108 मंदिरों की घंटियों का गूंजना।
कोटा (Kota)	राजस्थान की औद्योगिक नगरी, शिक्षा का तीर्थ (Coaching Capital), राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर, इंद्रप्रस्थ नगर।	चंबल नदी के जल से संचालित उद्योग, कोटा थर्मल पॉवर, और भारत का अग्रणी कोचिंग हब।
चित्तौड़गढ़ (Chittorgarh)	राजस्थान का गौरव, किलों का सिरमौर, शक्ति व भक्ति की पावन नगरी।	मेवाड़ का गौरवमयी त्याग, तीन ऐतिहासिक साके और विजय स्तम्भ की उपस्थिति।
अलवर (Alwar)	राजस्थान का सिंहद्वार (Gateway of Rajasthan), राजस्थान का स्कॉटलैंड (शराब निर्माण हेतु), पूर्वी राजस्थान का कश्मीर।	दिल्ली से राजस्थान में प्रवेश का सिंहद्वार; सर्वाधिक मदिरा निर्माण इकाइयों की उपस्थिति।
भरतपुर (Bharatpur)	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, लोहागढ़ की धरती, पक्षियों का स्वर्ग (केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान)।	अजय लोहागढ़ दुर्ग और विश्व प्रसिद्ध घना पक्षी विहार के कारण।
बीकानेर (Bikaner)	ऊन का घर (Wool Capital of India), रातीघाटी, जांगल देश, ऊंटों का देश।	एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी बीकानेर में स्थित है।
सिरोही / माउंट आबू	राजस्थान का शिमला (सर्वाधिक ठंडा स्थान), राजस्थान का बरखोयान्स्क, संतों का शिखर (गुरुशिखर)।	राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन, जहां सर्वाधिक वर्षा व सबसे कम तापमान रहता है।